वर्ष-6, अंक 24, अप्रैल-जून 2020

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ISSN 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

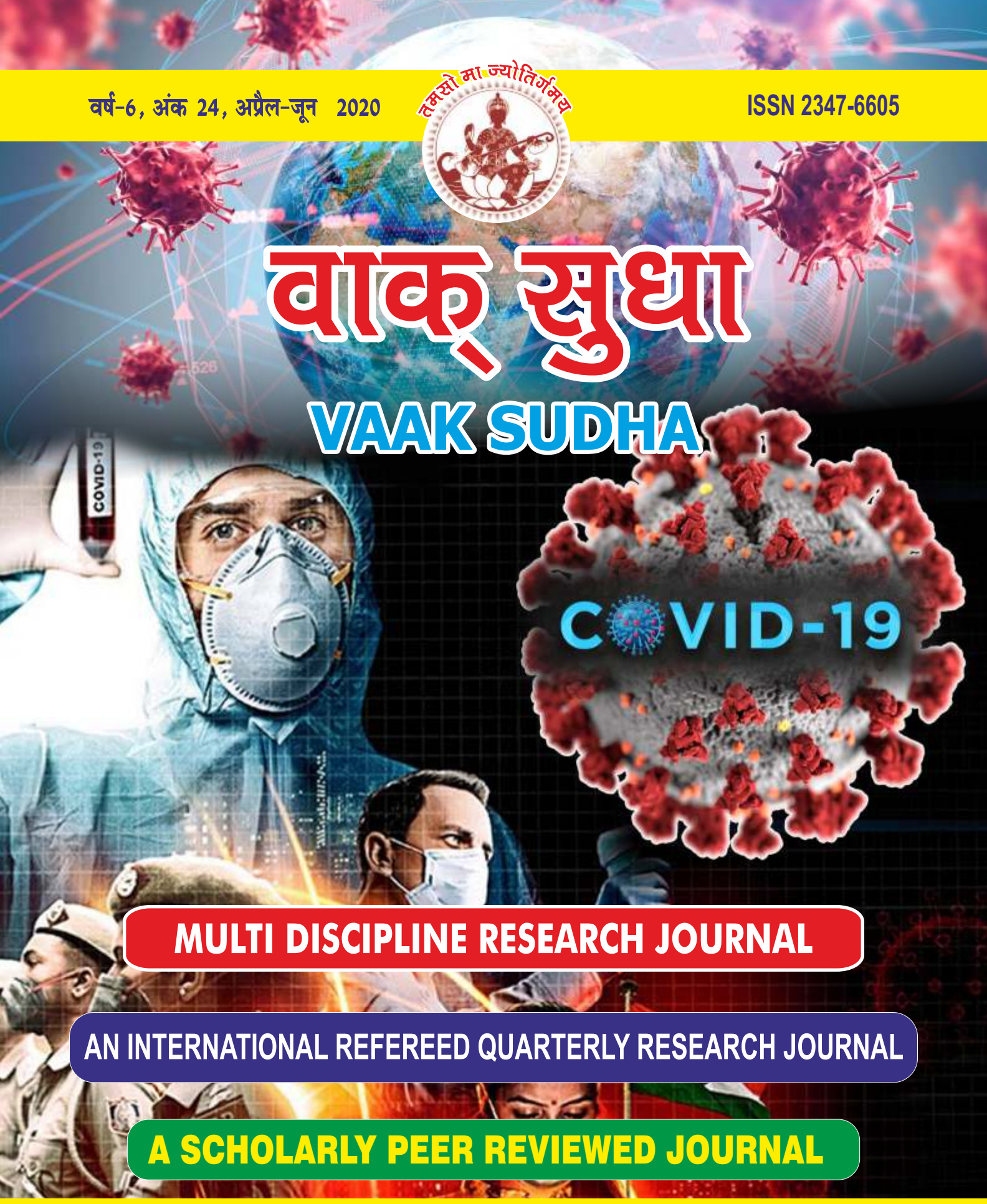

MULTI DISCIPLINE RESEARCH JOURNAL

AN INTERNATIONAL REFEREED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

A SCHOLARLY PEER REVIEWED JOURNAL

www.vaaksudha.com

वर्ष : 6 • अंक : 24 • अप्रैल-जून 2020 • ISSN 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

विशेष सूचना :

विचार की प्रतिबद्धता में राष्ट्रहित सर्वोपरि है।

संरक्षक :

प्रो. दलवीर सिंह चौहान

पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

रूपेश कुमार चौहान

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

दूरभाष संख्या-09555222747, 09540468787, 0991158532, 09266319639

Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vaaksudha.com

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 9

नारी जीवन के विविध आयाम : संस्कृत साहित्य के आलोक में विल्हण का काव्य-ग्रंथ 10
कुमारी सुलेखा रानी

अभिज्ञान शाकुंतल में शकुंतला और दुष्यंत का दाम्पत्य जीवन..... 12
डा. सुजाता कुमारी

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में अभिव्यक्त पारिवारिक संघर्ष..... 15
अंकित अभिषेक

कालिदास के महाकाव्य में प्रकृति विशेषकर प्रेरणा ग्रहण..... 22
मणि वाजपेयी

ग्रामीणों के सामाजिक विकास में शिक्षित महिलाओं का योगदान विशेषकर वैधानिक अधिकार के संदर्भ में 26
डॉ. प्रमोद कुमार प्रभाकर

महाभाष्यकालीन आर्थिक स्थिति विशेषकर राजकीय आय 29
डॉ० इंद्रजीत कुमार

सामाजिक सुधार और गाँधी-अम्बेडकर का तुलनात्मक अध्ययन..... 32
डॉ. रेखा कुमारी

श्रीमद्भगवद्गीता में दार्शनिक तत्त्व 35
माधव झा

हिंदी दलित कविता : इतिहास बोध का स्वरूप.. 38
डॉ. चैनसिंह मीना

सच्चिदानंद सिन्हा का पटना विश्वविद्यालय के वायस चांसलर के रूप में मूल्यांकन..... 43
डॉ० समरेन्द्र नाथ विश्वास

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सम्बन्ध 48
डॉ. नवीन कुमार

विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) और भारतीय निर्यात व्यापार का एक अध्ययन..... 51
डॉ. चन्द्रमणि प्रसाद

नालन्दा जिला में ग्रामीण बेरोजगारी को दूर करने में मनरेगा (नरेगा) की भूमिका..... 55
डॉ. रंजु कुमारी

वेद, उपनिषदों एवं भगवद्गीता में 'मन' से सम्बन्धित विचार..... 62
डा. प्रीति शुक्ला

सूरकाव्य : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की दृष्टि में..... 65
रिंकु कुमारी

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रासंगिकता..... 68
प्रो. रसाल सिंह

वैश्विक समस्याओं का गीतोक्त समाधान..... 75
डॉ. ललन कुमार पाण्डेय

भारतीय परम्परा में गृहस्थ आश्रम का महत्त्व 78
डॉ. सुजाता कुमारी

रामधारी सिंह दिनकर और रामनरेश त्रिपाठी की कविताओं में राष्ट्रवादी विचारधारा : एक अध्ययन 81
डॉ. स्नेहा कुमारी

'एक इंच मुस्कान' में नारी स्वतंत्रता के स्वर 87
विनीता कुमारी

नागार्जुन के उपन्यासों में नारी की राजनीतिक स्थिति 90
स्मिता कुमारी

त्रिलोचन की कविताओं में युगबोध 92
डॉ. रमण कुमार झा

गुरु गोबिंद सिंह जी के साहित्य में अर्थशास्त्रीय मूल्य..... 99
डॉ. शोभा कौर

नक्सलवाद के उद्भव के मूल कारणों का विश्लेषण 103
डॉ. प्रिंसी प्रिया राय

दक्षिण भारत में मंदिर प्रवेश आन्दोलन में श्रीनारायण गुरु का योगदान - एक ऐतिहासिक विमर्श 108
गायत्री सिन्हा

ग्रामीण विकास में स्वयंसेवी संस्थानों की उपादेयता 112
डॉ. मंजु कुमारी सिन्हा
शिक्षा में सुधार, शिक्षा से सुधार 117
धर्मवीर प्रसाद
डॉ॰ सच्चिदानन्द सिन्हा का प्रारम्भिक जीवन और तत्कालीन बिहार की राजनैतिक, सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण 121
रीता कुमारी
संत काव्य में हिंसा का प्रतिरोध 127
संतोष कुमार भारद्वाज
नागार्जुन की कविताओं में आत्मानुभूति 130
नीतू गौतम
रोजगार विहीनता और विकसित भारत की कल्पना 132
धर्मवीर प्रसाद
ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में प्रतिरोध का स्वर 136
सुनील कुमार वर्मा
मौर्योत्तर कालीन समाज में विधवा स्त्री की स्थिति : एक विवेचना 140
डॉ. प्रशांत कुमार
राजनैतिक चेतना के आलोक में नवजागरणकालीन हिन्दी पत्रकारिता 144
डॉ. पंकजेन्द्र किशोर
प्राचीन भारत में दंड नीति 149
डॉ. अवनीश कुमार
21वीं सदी में भारत-अमेरिका संबंध 153
जयवर्द्धन कुमार
दलित समस्या एवं समाधान : बिहार के संदर्भ में एक अध्ययन 157
संजीव कुमार
साम्राज्यवाद और लैंगिक प्रश्न 161
शैलेश रंजन
साहित्यों द्वारा शैक्षिक मूल्यों की तैयारी : आनंदमठ में नागरिक मूल्यों के विकास के सन्दर्भ में 167
सच्चिदानंद सिंह
स्वतंत्र भारत में बदलते मूल्य 173
डॉ. अनु कुमारी
संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार में समानता एवं अन्तर का विश्लेषण 179
डॉ. अंजु कुमारी
हिन्दी रंगमंच के अभिनेता की चिंता 184
भानु प्रताप सिंह
पाणिनीय व्याकरण परम्परा में यङ् प्रत्यय 186
डॉ भूपेन्द्र कुमार
दावानल : कारण, दुष्प्रभाव एवं समाधान 190
शाहिद अख्तर
नगरीय बाढ़ : कारण एवं समाधान 194
आबिद अख्तर
भारत-चीन संबंध का वर्तमान संदर्भ 199
डॉ. प्रदीप कुमार मांझी
सुरक्षा परिषद् का लोकतंत्रीकरण : भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी के संदर्भ में 202
डॉ. बालेश्वर माँझी
नियम एवं उदाहरण मिश्रित विधि से वेदान्त ग्रन्थों के व्याकरणिक विश्लेषण के लिए तद्धितान्त पदों की संगणकीय पहचान एवं विश्लेषण 206
डॉ. साक्षी
श्रीमद्भगवद्गीता में योग की अवधारणा 212
डा. मृत्युञ्जय कुमार
असाध्य वीणा : कर्तापन के भाव से विमुक्ति 216
डॉ. कंचन कुमारी
दिनकर काव्य में राजनीतिक चेतना 220
डॉ. वीरेन्द्र कुमार दत्ता
बालकृष्ण भट्ट की राष्ट्रीय चेतना 225
गुड्डू कुमार
हिन्दी साहित्य के मुख्य पात्रों में एक यह भी 'भोरई केवट' 228
रवीन्द्र सिंह
कर्मभूमि में राष्ट्रीय परिदृश्य 233
अभय कुमार
श्रीमद्भागवतमहापुराणे निरूपित वर्णाव्यवस्था 238
सचिन द्विवेदी
'जानकीजीवनम्' महाकाव्य का अंगीरस और उसका निर्वहण 241
डॉ. राधा कान्त तिवारी
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी की भूमिका : एक सिंहावलोकन 244
डॉ. सुशान्त कुमार झा
मानव मूल्यों में बौद्ध सम्राट अशोक का योगदान 251
डॉ. नील कमल कुमार
केदारनाथ सिंह की कविताओं में ग्रामीण-संवेदना 254
अनुज कुमार

डॉ. शोभा कौर

गुरु गोबिंद सिंह जी के साहित्य में अर्थशास्त्रीय मूल्य

गुरु गोबिंद सिंह भारतीय सभ्यता और संस्कृति के ऐसे संत-सिपाही हैं जिन्होंने मध्यकालीन सांस्कृतिक अवमूल्यन के घोर संकटकाल में अपनी तलवार के अतिरिक्त कलम के माध्यम से भी सशक्त योद्धा की भूमिका निभाई। भारतीय धर्मशास्त्र, दर्शन, संस्कृति, साहित्य और इतिहास को उन्होंने न कवेल बचाया अपितु उसका संरक्षण एवं संवर्द्धन भी किया। उन्होंने भारतीय समाज को इतना सुदृढ़ आर्थिक आधार प्रदान किया कि आज भी भारत की अर्थवयवस्था में सिखों की भूमिका सर्वोपरि है।

गुरु गोबिंद सिंह कृत 'श्री दसम ग्रन्थ' हिंदी साहित्य का वह अनमोल खजाना है जो गुरुमुखी लिपि में होने के कारण लम्बे समय तक समुचित अध्ययन का विषय नहीं बन पाया। श्री दसम ग्रन्थ में निम्नलिखित 17 रचनाएँ संगृहित हैं–1. जापु 2. अकाल स्तुति 3. विचित्र नाटक (आत्मकथा) 4. चंडी चरित्र (प्रथम) 5. चंडी चरित्र 6. वार भगउती जी की (चंडी दी वार) 7. ज्ञान प्रबोध 8. चौबीस अवतार 9. महंदी मीर 10. ब्रह्मावतार 11. रुद्रावतार 12. स्फुट 13. शस्त्रनाम माला 14. चरित्रोपाख्यान (405 चरित्र) 15. जफरनामा 16. हिकायतें।

प्रश्न उठ सकता है कि इस विषय पर अध्ययन का औचित्य क्या है? वास्तव में गुरु गोबिंद सिंह जी ने जाति-पाती विहीन खालसा पंथ की स्थापना की जो मुख्यत: सैन्य संगठन था। एक सैन्य संगठन के लिए अस्त्र शस्त्र, घोड़े, हाथी, भंडार-गृह, सैन्य प्रशिक्षण, भोजन आदि की व्यवस्था किस प्रकार होती होगी? गुरु जी ने अखिल भारतीय स्तर के श्रेष्ठ साहित्यकारों और कलाकारों को अपने दरबार में प्रश्रय दिया था। इस संरक्षण में धन की व्यवस्था कैसे होती होगी? गोबिंद समय का आर्थिक परिदृश्य किस प्रकार का था? भारतीय समाज में सिख गुरुओं का आर्थिक चिन्तन और योगदान किस प्रकार का था? श्री दसम ग्रन्थ में अर्थशास्त्रीय मूल्यों के प्रति क्या विचार व्यक्त हुए हैं?

वर्तमान में अर्थशास्त्र से आशय केवल इकोनॉमिक्स अर्थात् धन विषयक ज्ञान। प्राचीन काल में इसे वार्ताशास्त्र के नाम से पुकारा जाता था। अमरकोश में अर्थ के लिए धन, वस्तु, द्रव्य, वित्त, रिक्थ, हिरन्य, विभव आदि शब्दों का उल्लेख मिलता है। स्वयंभू मन्वन्तर में धर्म, बुद्धि के अंश का नाम अर्थ है। जैन मत के अनुसार सता, सत्व, द्रव्य, अन्वय, वस्तु, और विधि शब्द यअर्थ के पर्याय हैं। कौटिल्य काल में अर्थशास्त्र का व्यापक स्वरूप सामने आया, जिसके अंतर्गत अर्थनीति, दंडनीति, धर्मशास्त्र, न्यायशास्त्र, युद्धशास्त्र आदि को सम्मिलित किया जाता था। लम्बे समय तक कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र का ही अनुकरण हुआ।

भारत का आर्थिक परिदृश्य :

भारत के आर्थिक परिदृश्य पर एक संक्षिप्त दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि पूर्व मध्यकाल में वैदिक युग के पश्चात् कृषि का काफी विकास हुआ। बौद्ध साहित्य, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजकीय खेतों का जिक्र मिलता है। मौर्य काल के पश्चात् कृषि में साझेदारों और ऋण से बंधे दसों के श्रम का महत्त्व बढ़ गया। गुप्तकाल और उसके बाद बड़े-बड़े खेतों का जिक्र मिलना बंद को जाता है चाहे वे राजकीय हों या निजी। 7वीं शती के मध्य तक अधिकतर शूद्र, छोटे किसान बन चुके थे। 7वीं-8वीं शती में आर्थिक प्रगति का आधार केवल कृषि तक सीमित नहीं था। 11वीं-12वीं शती से राज्य ने किसानों पर लगान की